Lal Kitab Horoscope

World's Most Popular Lal Kitab Astrology Software

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद दुःख भाग्भवेत ।।

May all be happy. May all be without diseases.
May all see good in the world. May no one have any sorrows.

Raghav Gupta

नाम	:	Raghav Gupta
जन्मतिथि	:	23 July 1980
जन्म समय	:	10:50:00 AM
जन्म स्थान	:	Agra (U P)

सौजन्य से

-

Raghav Gupta

जन्मतिथि	23 Jul 1980
जन्म समय	10:50:00 AM
जन्म स्थान	Agra (U P)
अक्षांश	27.11 North
रेखांश	78.0 East
अयनांश	एन सी लाहिरी
स्थानीय मानक समय	10:32:00
साम्पातिक काल	6:36:23
स्थानीय समय संशोधन	18:0:0

अवकहड़ा चक्र

लग्न	कन्या
लग्नपति	बुध
राशी	वृश्चिक
राशी स्वामी	मंगल
नक्षत्र	अनुराधा
नक्षत्र स्वामी	शनि
तिथि	एकादशी शुक्ल
करण	वनिज
पाया	ताँबा
नाड़ी	मध्य
प्रथम अक्षर	न, नी, नू, ने
वश्य	कीट
दान की वस्तुयें	देसी घी, दही, कपूर
पितृ ऋण	नहीं है
मातृ ऋण	नहीं है
बंधु ऋण	नहीं है
स्त्री ऋण	नहीं है
जीव हत्या ऋण	नहीं है
कन्या ऋण	नहीं है
सूर्य राशि	सिंह
डेकानेट	1

घात चक्र

राशी	वृष
माह	आश्विन
तिथि	1,6,11
दिवस	शुक्रवार
नक्षत्र	रेवती
प्रहर	1
लग्न	वृश्चिक
योग	ब्रह्म
करण	गर

शुभ अशुभ विचार

सौभाग्य अंक	5
शुभांक	2,4,5,8
अशुभ अंक	1,7,9
शुभ वर्ष	14,23,32,41,50,
शुभ दिन	बुधवार, शुक्रवार
शुभ ग्रह	बुध, शुक्र
अशुभ ग्रह	मंगल, गुरु
मित्र राशि	वृष कन्या तुला
शुभ रत्न	पन्ना
शुभ धातु	कांस
शुभ समय	सूर्योदय के दो घंटे बाद
शुभ दिशा	उत्तर

ग्रह दृष्टि

सामान्य दृष्टि

ग्रह	रवि	बुध	शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	चन्द्र	राहु	केतु
रवि									
बुध									
शुक्र									
मंगल									
गुरु									
शनि									
चन्द्र	अर्ध		अर्ध					अर्ध	
राहु									
केतु									

ग्रहों की दृष्टि

ग्रह	रवि	बुध	शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	चन्द्र	राहु	केतु
रवि									x
बुध									
शुक्र							x		
मंगल									
गुरु									
शनि			x						
चन्द्र			x						
राहु							x		x
केतु	x		x	x				x	

टक्कर की दृष्टि

ग्रह	रवि	बुध	शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	चन्द्र	राहु	केतु
रवि									
बुध									x
शुक्र									
मंगल									
गुरु									
शनि									
चन्द्र		x							
राहु									
केतु					x	x			

बुनियादी दृष्टि

ग्रह	रवि	बुध	शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	चन्द्र	राहु	केतु
रवि									
बुध									
शुक्र									x
मंगल			x						
गुरु									
शनि									
चन्द्र	x							x	
राहु									
केतु				x					

धोखे की दृष्टि

ग्रह	रवि	बुध	शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	चन्द्र	राहु	केतु
रवि									
बुध									
शुक्र									
मंगल		x							
गुरु			x						
शनि			x						
चन्द्र					x	x			
राहु									
केतु									

सहचरी दिवार दृष्टि

ग्रह	रवि	बुध	शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	चन्द्र	राहु	केतु
रवि		x			x	x			
बुध	x		x					x	
शुक्र		x							
मंगल					x	x			
गुरु	x			x				x	
शनि	x			x				x	
चन्द्र									
राहु		x			x	x			
केतु									

अचानक प्रहार दृष्टि

ग्रह	रवि	बुध	शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	चन्द्र	राहु	केतु
रवि			x	x					
बुध									
शुक्र	x							x	
मंगल	x						x	x	
गुरु		x							
शनि		x							
चन्द्र				x					x
राहु			x	x					
केतु							x		

आपसी मदद दृष्टि

ग्रह	रवि	बुध	शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	चन्द्र	राहु	केतु
रवि							x		
बुध									
शुक्र				x					
मंगल									x
गुरु									
शनि									
चन्द्र									
राहु							x		
केतु			x						

लाल किताब लग्न कुण्डली

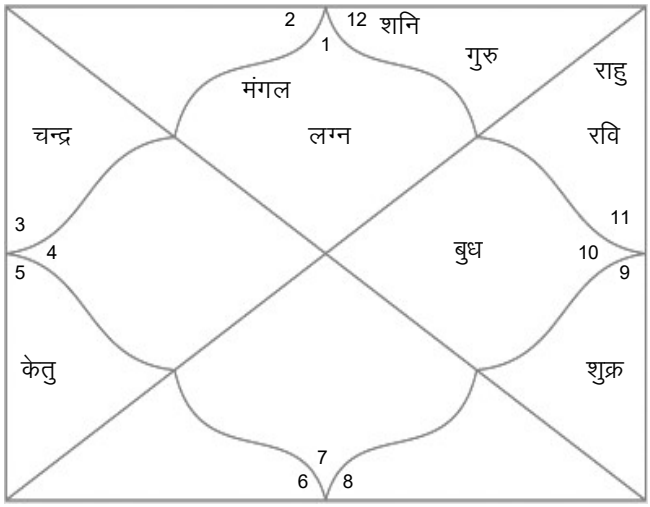

वैदिक लग्न कुन्डली

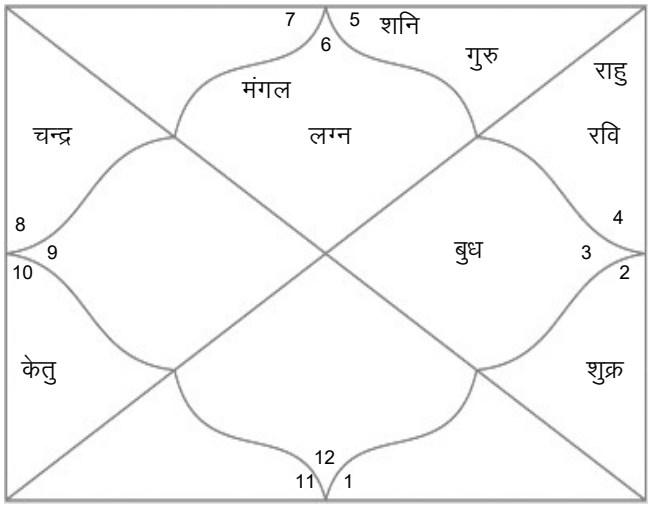

लाल किताब के अनुसार ग्रहों की स्थिती

ग्रह	गृह	पति	पक्का	भाव का ग्रह	साथी	कायम	धर्मी	सुप्त	————	————
लग्न	पहला भाव							हां		अशुभ
रवि	एकादश भाव	12								अशुभ
बुध	दशम भाव	1,10						हां		शुभ
शुक्र	नवम भाव	2,9								अशुभ
मंगल	पहला भाव	3,8				हां		हां		शुभ
गुरु	द्वादशम भाव	4,7	हां			हां				शुभ
शनि	द्वादशम भाव	6,5					हां	हां		शुभ
चन्द्र	तृतीय भाव	11								अशुभ
राहु	एकादश भाव									शुभ
केतु	पंचम भाव									अशुभ

वैदिक रीति से ग्रह स्थितियां

ग्रह	दिशा	राशी	पति	डिग्री	पद	पति	कारक	————
लग्न		कन्या	बुध	14:31:17	हस्त——2	चन्द्र		
रवि	मार्गी	कर्क	चन्द्र	6:55:1	पुष्य——2	शनि	पिता	मित्र भाव में
बुध	मार्गी	मिथुन	बुध	21:37:56	पुनर्वसु——1	गुरु	बुद्धि	
शुक्र	मार्गी	वृषभ	शुक्र	26:59:45	मृगशिरा——2	मंगल	जीवनसाथी	
मंगल	मार्गी	कन्या	बुध	13:32:7	हस्त——2	चन्द्र	विक्रम	सम
गुरु	मार्गी	सिंह	रवि	16:21:3	पूर्वा——1	शुक्र	धनसम्पदा	मित्र भाव में
शनि	मार्गी	सिंह	रवि	29:37:54	उत्तरा——1	रवि	परमायु	शत्रु भाव में
चन्द्र	मार्गी	वृश्चिक	मंगल	10:23:20	अनुराधा——3	शनि	माता	नीचस्थ
राहु	वक्री	कर्क	चन्द्र	27:29:47	आश्लेषा——4	बुध	अभिलाषा	
केतु	वक्री	मकर	शनि	27:29:47	धनिष्ठा——2	मंगल	मोक्ष	

लाल किताब दशा

I. 23-07-1980 - 23-07-2015

चन्द्र

ग्रह	तारीख
गुरु	23.11.1980
रवि	23.03.1981
चन्द्र	23.07.1981

शुक्र

ग्रह	तारीख
मंगल	23.07.1982
शुक्र	23.07.1983
बुध	23.07.1984

मंगल

ग्रह	तारीख
मंगल	23.07.1986
शनि	23.07.1988
शुक्र	23.07.1990

बुध

ग्रह	तारीख
चन्द्र	23.03.1991
मंगल	23.11.1991
गुरु	23.07.1992

शनि

ग्रह	तारीख
राहु	23.07.1994
बुध	23.07.1996
शनि	23.07.1998

राहु

ग्रह	तारीख
मंगल	23.07.2000
केतु	23.07.2002
राहु	23.07.2004

केतु

ग्रह	तारीख
शनि	23.07.2005
राहु	23.07.2006
केतु	23.07.2007

गुरु

ग्रह	तारीख
केतु	23.07.2009
गुरु	23.07.2011
रवि	23.07.2013

रवि

ग्रह	तारीख
रवि	23.03.2014
चन्द्र	23.11.2014
मंगल	23.07.2015

II. 23-11-2015 - 23-07-2050

चन्द्र

ग्रह	तारीख
गुरु	23.11.2015
रवि	23.03.2016
चन्द्र	23.07.2016

शुक्र

ग्रह	तारीख
मंगल	23.07.2017
शुक्र	23.07.2018
बुध	23.07.2019

मंगल

ग्रह	तारीख
मंगल	23.07.2021
शनि	23.07.2023
शुक्र	23.07.2025

बुध

ग्रह	तारीख
चन्द्र	23.03.2026
मंगल	23.11.2026
गुरु	23.07.2027

शनि

ग्रह	तारीख
राहु	23.07.2029
बुध	23.07.2031
शनि	23.07.2033

राहु

ग्रह	तारीख
मंगल	23.07.2035
केतु	23.07.2037
राहु	23.07.2039

केतु

ग्रह	तारीख
शनि	23.07.2040
राहु	23.07.2041
केतु	23.07.2042

गुरु

ग्रह	तारीख
केतु	23.07.2044
गुरु	23.07.2046
रवि	23.07.2048

रवि

ग्रह	तारीख
रवि	23.03.2049
चन्द्र	23.11.2049
मंगल	23.07.2050

III. 23-11-2050 - 23-07-2085

चन्द्र

ग्रह	तारीख
गुरु	23.11.2050
रवि	23.03.2051
चन्द्र	23.07.2051

शुक्र

ग्रह	तारीख
मंगल	23.07.2052
शुक्र	23.07.2053
बुध	23.07.2054

मंगल

ग्रह	तारीख
मंगल	23.07.2056
शनि	23.07.2058
शुक्र	23.07.2060

बुध

ग्रह	तारीख
चन्द्र	23.03.2061
मंगल	23.11.2061
गुरु	23.07.2062

शनि

ग्रह	तारीख
राहु	23.07.2064
बुध	23.07.2066
शनि	23.07.2068

राहु

ग्रह	तारीख
मंगल	23.07.2070
केतु	23.07.2072
राहु	23.07.2074

केतु

ग्रह	तारीख
शनि	23.07.2075
राहु	23.07.2076
केतु	23.07.2077

गुरु

ग्रह	तारीख
केतु	23.07.2079
गुरु	23.07.2081
रवि	23.07.2083

रवि

ग्रह	तारीख
रवि	23.03.2084
चन्द्र	23.11.2084
मंगल	23.07.2085

लाल किताब में भाव

भाव	ग्रह	मालिक	पक्का	सुप्त	उच्च	नीचस्थ	भाग्योदय ग्रह
1	मंगल	मंगल	सूर्य		रवि	शनि	मंगल
2		शुक्र	बृहस्पति	हां	चन्द्र		चंद्र
3	चन्द्र	बुध	मंगल		राहु	केतु	बुध
4		चन्द्र	चंद्र		गुरु	मंगल	चंद्र
5	केतु	रवि	बृहस्पति				सूर्य
6		बुध	बुध, केतु		बुध, राहु	शुक्र, केतु	केतु
7		शुक्र	शुक्र, बुध		शनि		शुक्र
8		मंगल	मंगल, शनि			चन्द्र	चंद्र
9	शुक्र	गुरु	बृहस्पति		केतु	राहु	शनि
10	बुध	शनि	शनि		मंगल	गुरु	शनि
11	रवि, राहु	शनि	शनि				बृहस्पति
12	गुरु, शनि	गुरु	बृहस्पति		शुक्र, केतु	बुध, राहु	राहु

ग्रहों के आपसी संबंध

ग्रह	रवि	बुध	शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	चन्द्र	राहु	केतु
रवि		सम	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	सम	सम
बुध	मित्र		मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	मित्र	सम
शुक्र	शत्रु	मित्र		सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र
मंगल	मित्र	शत्रु	सम		मित्र	सम	मित्र	सम	शत्रु
गुरु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र		सम	मित्र	सम	सम
शनि	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	सम		शत्रु	मित्र	सम
चन्द्र	मित्र	मित्र	सम	सम	सम	सम		सम	शत्रु
राहु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम		मित्र
केतु	सम	सम	मित्र	शत्रु	सम	सम	शत्रु	मित्र	

लाल किताब चन्द्र कुण्डली

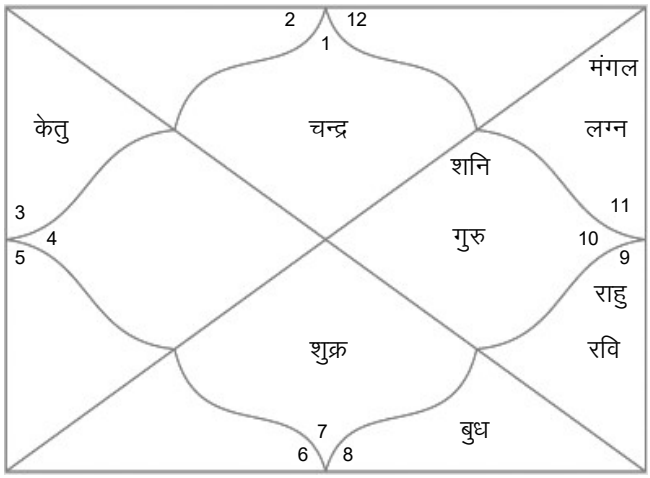

चंद्र कुण्डली

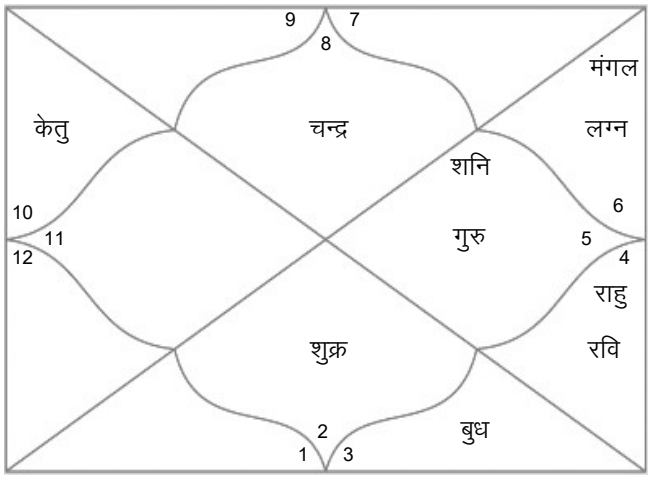

लाल किताब के अनुसार हस्तरेखाओं की संभावित स्थिति

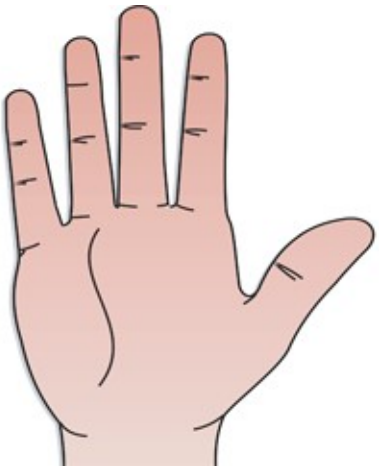

रवि––एकादश भाव

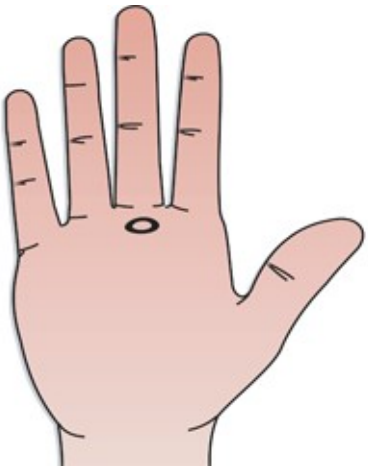

बुध––दशम भाव

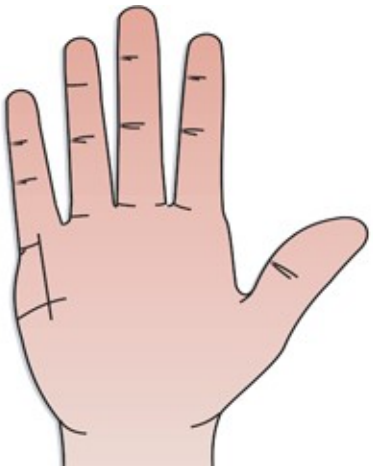

शुक्र––नवम भाव

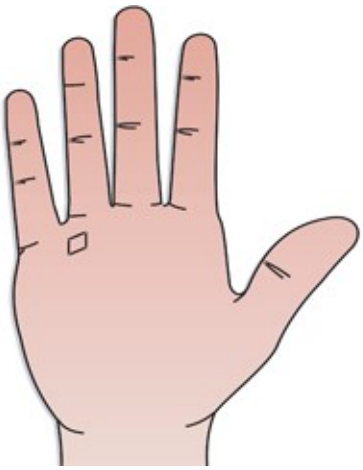

मंगल––पहला भाव

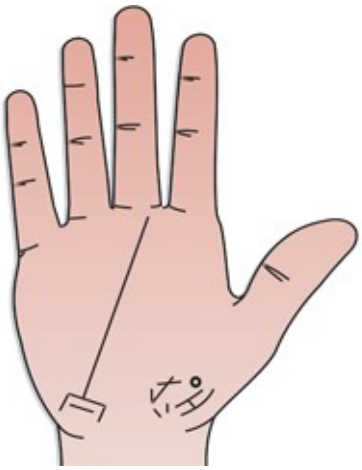

गुरु––द्वादशम भाव

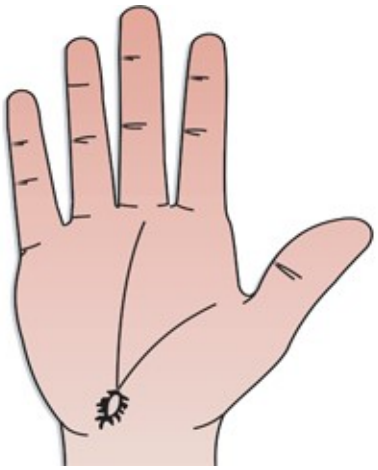

शनि––द्वादशम भाव

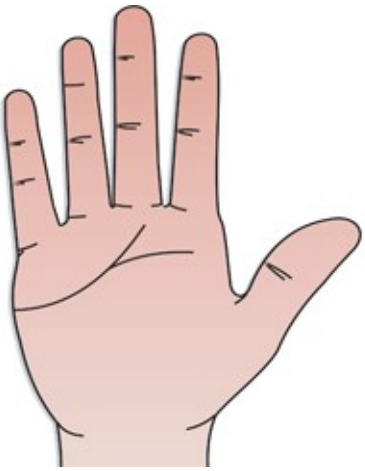

चन्द्र––तृतीय भाव

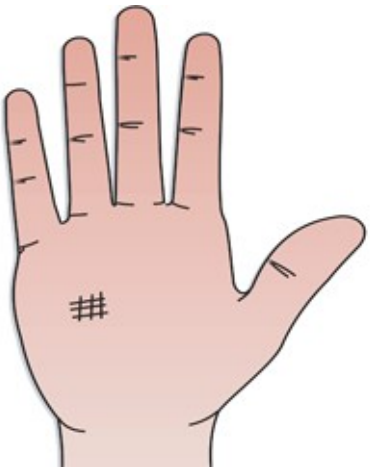

राहु––एकादश भाव

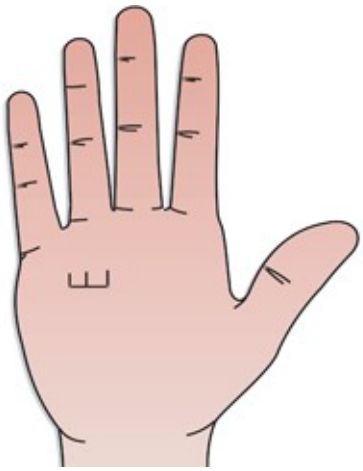

केतु––पंचम भाव

विंशोत्तरी प्रत्यन्तर

शुक्र

	03-07-2013 - 02-11-2016
शुक्र	03-07-2013 - 22-01-2014
रवि	22-01-2014 - 24-03-2014
चन्द्र	24-03-2014 - 04-07-2014
मंगल	04-07-2014 - 13-09-2014
राहु	13-09-2014 - 14-03-2015
गुरु	14-03-2015 - 24-08-2015
शनि	24-08-2015 - 03-03-2016
बुध	03-03-2016 - 23-08-2016
केतु	23-08-2016 - 02-11-2016

रवि

	02-11-2016 - 02-11-2017
रवि	02-11-2016 - 20-11-2016
चन्द्र	20-11-2016 - 21-12-2016
मंगल	21-12-2016 - 11-01-2017
राहु	11-01-2017 - 07-03-2017
गुरु	07-03-2017 - 25-04-2017
शनि	25-04-2017 - 22-06-2017
बुध	22-06-2017 - 12-08-2017
केतु	12-08-2017 - 03-09-2017
शुक्र	03-09-2017 - 02-11-2017

चन्द्र

	02-11-2017 - 04-07-2019
चन्द्र	02-11-2017 - 23-12-2017
मंगल	23-12-2017 - 27-01-2018
राहु	27-01-2018 - 29-04-2018
गुरु	29-04-2018 - 19-07-2018
शनि	19-07-2018 - 23-10-2018
बुध	23-10-2018 - 18-01-2019
केतु	18-01-2019 - 22-02-2019
शुक्र	22-02-2019 - 04-06-2019
रवि	04-06-2019 - 04-07-2019

मंगल

	04-07-2019 - 03-09-2020
मंगल	04-07-2019 - 29-07-2019
राहु	29-07-2019 - 30-09-2019
गुरु	30-09-2019 - 26-11-2019
शनि	26-11-2019 - 02-02-2020
बुध	02-02-2020 - 02-04-2020
केतु	02-04-2020 - 27-04-2020
शुक्र	27-04-2020 - 07-07-2020
रवि	07-07-2020 - 28-07-2020
चन्द्र	28-07-2020 - 02-09-2020

राहु

	03-09-2020 - 03-09-2023
राहु	03-09-2020 - 14-02-2021
गुरु	14-02-2021 - 10-07-2021
शनि	10-07-2021 - 31-12-2021
बुध	31-12-2021 - 04-06-2022
केतु	04-06-2022 - 07-08-2022
शुक्र	07-08-2022 - 05-02-2023
रवि	05-02-2023 - 01-04-2023
चन्द्र	01-04-2023 - 01-07-2023
मंगल	01-07-2023 - 03-09-2023

गुरु

	03-09-2023 - 04-05-2026
गुरु	03-09-2023 - 10-01-2024
शनि	10-01-2024 - 13-06-2024
बुध	13-06-2024 - 29-10-2024
केतु	29-10-2024 - 24-12-2024
शुक्र	24-12-2024 - 05-06-2025
रवि	05-06-2025 - 23-07-2025
चन्द्र	23-07-2025 - 13-10-2025
मंगल	13-10-2025 - 08-12-2025
राहु	08-12-2025 - 04-05-2026

शनि

	04-05-2026 - 04-07-2029
शनि	04-05-2026 - 03-11-2026
बुध	03-11-2026 - 16-04-2027
केतु	16-04-2027 - 23-06-2027
शुक्र	23-06-2027 - 01-01-2028
रवि	01-01-2028 - 28-02-2028
चन्द्र	28-02-2028 - 04-06-2028
मंगल	04-06-2028 - 10-08-2028
राहु	10-08-2028 - 30-01-2029
गुरु	30-01-2029 - 04-07-2029

बुध

	04-07-2029 - 03-05-2032
बुध	04-07-2029 - 28-11-2029
केतु	28-11-2029 - 27-01-2030
शुक्र	27-01-2030 - 18-07-2030
रवि	18-07-2030 - 08-09-2030
चन्द्र	08-09-2030 - 03-12-2030
मंगल	03-12-2030 - 02-02-2031
राहु	02-02-2031 - 07-07-2031
गुरु	07-07-2031 - 22-11-2031
शनि	22-11-2031 - 04-05-2032

केतु

	03-05-2032 - 03-07-2033
केतु	03-05-2032 - 28-05-2032
शुक्र	28-05-2032 - 07-08-2032
रवि	07-08-2032 - 29-08-2032
चन्द्र	29-08-2032 - 03-10-2032
मंगल	03-10-2032 - 28-10-2032
राहु	28-10-2032 - 31-12-2032
गुरु	31-12-2032 - 26-02-2033
शनि	26-02-2033 - 04-05-2033
बुध	04-05-2033 - 03-07-2033

लाल किताब में उपाय

1.आमतौर पर प्रत्येक उपाय की अवधि 40 से 43 दिन है। परन्तु परिस्थिति विशेष में 40 से 43 सप्ताह तक ग्रह विशेष का साप्ताहिक उपाय करें।

2.अगर किसी कारणवश क्रम टूट जाता है तो पुनः नये सिरे से उपाय करना होगा तभी उपाय फलित होगा अन्यथा लाभ नहीं मिलेगा।

3.अगर आप पुनः नये सिरे से उपाय करने से बचना चाहें तो दूध से धोए हुए चावल अपने पास रखें।

4.ग्रह विशेष के सभी उपाय एक साथ करने की आवश्यकता नहीं है। जितना आपकी क्षमता में हो उतना ही करें।

5.उपाय दिन के समय सूर्योदय से सूर्यास्त तक करें। रात के समय उपाय नहीं करें क्योंकि रात का स्वामी शनि होने से उपाय का परिणाम विपरीत भी हो सकता है।

6.अपने खून का सम्बन्धी कोई रिश्तेदार दूसरे के लिए उपाय कर सकता है। यह फलदायी है।

7.यदि मरते समय कोई प्राणी किसी ग्रह की वस्तु आशीर्वाद स्वरूप किसी को देता है तो वह शुभ फलदायी होगा।

8. अपने जीवन में सुख–समृद्धि एवं प्रसिद्धि प्राप्त करने के लिए कोई भी व्यक्ति इन उपायों को कर सकता है।

सूर्य के उपाय

1.अपने स्वास्थ्य को उत्तम बनाने के लिए, सरकारी नौकरी या सरकार से लाभ पाने के लिए तथा समाज में मान–सम्मान प्राप्त करने के लिए आप सूर्य का उपाय कर सकते हैं।

2.बहते पानी में गुड़ बहा दें।

3.सोने के स्थान पर तॉम्बा धारण करें।

4.गेहूँ, लाल फूल व ताम्बे के पात्र दान करें।

5.आदित्य हृदय स्तोत्र व हरिवंश पुराण का पाठ करें।

चंद्र के उपाय

1.माता के स्वास्थ्य एवं सुख को बढ़ाने के लिए तथा मानसिक शान्ति को प्राप्त करने के लिए आप चन्द्र का उपाय कर सकते हैं।

2.किसी बर्तन में दूध या पानी सिरहाने रख कर सोएं तथा सवेरे उसे कीकर के वृक्ष में डालें।

3.शादी के समय चांदी, चावल और व्यक्ति के वजन के बराबर नदी का पानी लाकर घर में रखें।

4.चॉदी, चावल व दूध का दान करें।

5.रूद्राभिषेक गंगाजल या कच्चे दूध से करें।

बृहस्पति के उपाय

1.पिता का सुख पाने के लिए, उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए तथा अध्यात्म में उच्च स्तर तक पहुंचने के लिए आप बृहस्पति का उपाय करें।

2.नाभि या जबान पर केसर लगाएं।

3.दहेज में दिया गया सोना बृहस्पति के प्रभाव को उत्तम करता है।

4.चने की दाल व सोना दान करें।

5.हरि पूजन या शालीग्राम अभिषेक करें।

शनि के उपाय

1.भारी मशीन के व्यवसाय, न्याय के क्षेत्र में सफलता तथा मजदूर वर्ग से लाभ के लिए आप शनि का उपाय करें।

2.तेल में छाया देखकर छाया पात्र दान करें।

3.अगर आपमें कोई बुरी आदत है तो काले नमक की दो डलियॉ या काले सुरमे की दो डलियॉ अथवा लोहे के दो टुकड़े लेकर संकल्प लें कि आप इन बुराईयों से परहेज करेंगे.

4.आर्थिक परेशानी से बचाव के लिए कौए को रोटी डालें।

5.संतान प्राप्ति के लिए कुत्ते को रोटी खिलाएं।

6.उड़द की दाल एवं लोहा दान करें।

7.शनि देव की उपासना करें।

बुध के उपाय

1.बुद्धि को बढ़ाने के लिए, बहन, बेटी, मामा आदि का सहयोग प्राप्त करने के लिए तथा व्यापार में लाभ प्राप्त करने के लिए आप बुध ग्रह का उपाय करें।

2.ताम्बे के पैसे में छेद कर दरिया में बहा दें।

3.मूंग की दाल, हरी सब्जी दान करें।

4.बुधवार को गाय को हरा चारा खिलाएं।

5.दुर्गा सप्तशती का पाठ करें।

मंगल के उपाय

1.भाईयों का सहयोग प्राप्त करने, पुरूषार्थ बढ़ाने एवं चोट व दुर्घटना से बचने के लिए आप मंगल का उपाय करें।

2.बहते पानी में बताशे डालें।

3.बेसन/बूंदी के लड्डू दान करें।

4.मीठी रोटी पकाकर कुत्ते को दें।

5.दूध में जौ धोकर नदी के जल में प्रवाहित करें।

6.नदी के जल में 400ग्रा0 रेवड़ी प्रवाहित करें।

7.नाभि पर केसर लगाएं

8.मसूर की दाल व मूंगा दान करें।

9.सुन्दरकाण्ड का पाठ करें।

शुक्र के उपाय

1.जीवनसाथी से सम्बन्धों में मधुरता लाने के लिए, कला, साहित्य, संगीत इत्यादि में सफलता प्राप्त करने के लिए आप शुक्र का उपाय करें।

2. गौ दान करें।

3. ज्वार अनाज का दान करें।

4. गाय को रोटी खिलाएं।

5. गौ पालन करें।

6. घी,दही,कपूर का दान करें।

राहु के उपाय

1.ससुराल पक्ष का सहयोग लेने तथा राजनीति के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के लिए राहु का उपाय करें।

2.लकड़ी के कच्चे कोयले दरिया में बहाएं।

3.मूली दान करें।

4.सरसों का दान करें।

5.कन्या दान करें। यदि स्वयं की कन्या न हो तो दूसरे की कन्या की शादी में धन खर्च करें।

केतु के उपाय

1.कूटनीति के क्षेत्र में सफल होने, साहसिक कार्यों में आगे बढ़ने तथा मोक्ष की प्राप्ति के लिए केतु का उपाय करें।

2. कुत्ते को रोटी डालें।

3. तिल का दान करें।

4. काली गाय दान करें।

5. अगर आपमें कोई बुरी आदत है तो दो रंग के दो पत्थर लेकर संकल्प करें कि आप इन आदतों से परहेज रखेंगे।

लाल किताब से भविष्य फल

आपका जन्म कन्या लग्न में हुआ है। आपके कन्धे और बाजू ढ़ीले होंगे। ऑखें गोल, नाक मध्यम और बाल घने होंगे। आप बुद्धिमान होंगे लेकिन पढ़ाई–लिखाई से जी चुराएंगे तो शिक्षा की स्थिति कमजोर रह सकती है। आप किसी एक अनौपचारिक शिक्षा में पारंगत हो सकते हैं। आपके स्वभाव में एक रूपता नहीं होगी, जिसके कारण निर्णय लेने में आपको परेशानी होगी और आप लाभ का मौका गॅवा सकते हैं। आप सत्य का पालन करने वाले एवं प्रिय वचन बोलने वाले होंगे, आप दूसरों से व्यवहार करने में बहुत चतुर होंगे। आप शर्मीले हो सकते हैं। आप शास्त्रों के भी जानकार हो सकते हैं। संगीत, कला एवं फिल्मों के आप शौकीन हो सकते हैं, हो सकता है कि इनमें से कोई आपकी हॉबी हो।

मानसिक क्षमताओं का उपयोग कर कार्य करना आपको पसंद होगा, जिन कामों में बुद्धि की विशेष आवश्यक्ता होगी उसमें आपको अच्छी सफलता मिलेगी। सरकारी क्षेत्र की अपेक्षा व्यवसाय में आपको धन का विशेष लाभ होगा। आपकी आर्थिक स्थिति काफी मजबूत होगी। आप सभी प्रकार के सांसारिक सुख सुविधाओं का उपभोग करेंगे। आप दूसरों के धन एवं मकान से भी सुख प्राप्त कर सकते हैं।

लाल किताब से भाव फल

रवि

आपकी कुण्डली के एकादश भाव में स्थित सूर्य शुभ फलदायी नही है इस स्थिति में सूर्य शनि से सम्बन्धित वस्तुओं में नुकसान पहुंचा सकता है। इस स्थिति में अगर आप अपना मकान बनाते हैं या बना–बनाया मकान खरीदते हैं तो हो सकता है कि आपको उस मकान में सुख की अनुभूति नहीं हो। ऐसे में अगर आप किसी और के नाम से मकान खरीदेंगे या बनवाएंगे तो सुख प्राप्ति की संभावना बढ़ेगी। आप शारीरिक रूप से कमज़ोर हो सकते हैं एवं सामाजिक स्तर पर भी आपका महत्व कम हो सकता है, अतः इन विषयों पर ध्यान दें। आपके कार्यों में रूकावटें आ सकती हैं। पैसा खर्च करते समय सावधानी रखें अन्यथा हो सकता है कि आपकी कमाई गयी दौलत आपके हाथों से निकलती जाए और आप हाथ मलते रह जाएं। अपनी संतान की देखभाल करें।

उपाय

1.शनि से सम्बन्धित वस्तुओं का दान करें रात में सफेद मूली, बादाम, व नारियल सिरहाने रख कर सोएं और प्रातः मन्दिर में दान करें। ऐसा आप 40–43 दिनों तक करें। यदि एक दिन भी छूट जाए तो पुनः इस प्रक्रिया को दोहराएं। काले रंग की वस्तुओं का दान न करें।

2.प्रायश्चित स्वरूप जीवित बकरा छोड़ने से पुत्र की प्राप्ति होगी।

3.छोटी उम्र अर्थात 24 वर्ष से पहले विवाह कर लें। आपका भाग्य विवाहोपरान्त जागृत होगा।

4.लाल–भूरी चीटियों को प्रतिदिन सुबह के समय आटा डालें।

4.प्रातःकाल सूर्योदय के समय रविवार को गेहूं, गुड़ व ताम्बे का दान करें।

5.नदी के जल में 40–43 दिनों तक गुड़ प्रवाहित करें।

6.आदित्य ह्रदय स्तोत्र या हरिवंश पुराण का पाठ करें।

7.कम से कम तीन माला गायत्री मंत्र का जाप करें।

8.नदी या अन्य किसी भी जल के बहते स्रोत में 40 से 43 दिनों तक निरन्तर ताम्बे का पैसा बहायें।

बुध

आपकी कुण्डली के दशम भाव में बुध किन्हीं कारणों से शुभ नहीं है। इस स्थिति में मन पर नियंत्रण र खना चाहिए और अनावश्यक चिंता बचना चाहिए अन्यथा आपके ऊपर मानसिक तनाव बना रहेगा। ऐसे में आपके लिए सलाह है कि शांत मस्तिष्क से कार्य करें। अगर आप सरकारी क्षेत्र में नौकरी की चाहत रखते हैं तो आपको कठिन परिश्रम के पश्चात् कामयाबी मिलने की संभावना है, इसी प्रकार व्यापार के मामलों में भी लाभ के लिए काफी प्रयास करना होगा। आपके लिए उत्तम होगा कि आप प्राइवेट सेक्टर में अपनी योग्यता के अनुरूप रोजगार तलाश करें, इसमें आपको सफलता मिलने की अच्छी संभावना

रहेगी।

उपाय

1.मन्दिर में ज्योति जलाने से शुभ प्रभाव मिलेगा।

2.दूसरों से परामर्श लेकर कार्य करने से शुभ परिणाम प्राप्त होगा।

3.कुत्ता पालने से लाभ होगा।

4.माथे पर केसर या काला तिलक लगाना शुभ होगा। भस्म नहीं लगाएं यह पिता के लिए शुभ नहीं होगा।

5. बुध के अशुभ प्रभाव से बचने के लिए क्रोध और वाणी पर नियंत्रण रखें। अपने शब्दों पर कायम रहें, अपना वचन पूरा करें। मन को भटकाव की ओर नहीं जाने दें।

6.गले में ताम्बे का टुकड़ा धारण करना शुभ फलदायी होगा।

शुक्र

आपकी कुण्डली के नवम भाव में स्थित शुक्र अशुभ फलदायी है। ऐसे में आपको वैवाहिक जीवन में सुख–शांति बनाये रखने के लिए समझदारी से कार्य करना होगा। अगर ऐसा नहीं करेंगे तो जीवनसाथी से मतभेद हो सकता है और आप दोनों अलग हो सकते हैं। रोज़गार भी आप दोनों के बीच अलगाव का कारण हो सकता है अतः सावधानी का पूरा ख्याल रखें।

आर्थिक विषयों में सोच–समझकर निर्णय लें एवं आय प्राप्ति के स्रोतों की तलाश। इससे आर्थिक परेशानियों में कमी आएगी। कारोबार एवं व्यवसाय में अगर लगन पूर्वक कार्य नहीं करेंगे तो लाभ मिलने की संभावना कम रहेगी। आपको संतान सुख के लिए भी इंतजार करना पड़ सकता है। आप किसी दूसरे की समस्याओं को अपने सिर नहीं लें अन्यथा स्वयं परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है।

उपाय

1.जीवनसाथी के हाथों से गोदान और अन्य वस्तुओं का दान कराएं, इससे धन और स्वास्थ्य की स्थिति अच्छी होगी।

2.राहु की वस्तुएं जैसे तिल, सरसों और नीले रंग के सामान का कारोबार न करें।

3.संध्या काल में जीवनसाथी के हाथों से नीला फूल जंगल में दबवाएं।

मंगल

आपकी कुण्डली के प्रथम भाव में मंगल किन्हीं कारणों से शुभ नहीं है। इस स्थिति में आपको कठिन परिस्थितियों से गुजरना पड़ सकता है। आपके जन्म के 40–42 दिनों के अन्दर ही ऐसी परिस्थिति बनने की संभावना है जिससे आपके भाई बन्धु आपसे मुंह मोड़ सकते हैं एवं आपके माता–पिता दुःखी और परेशान हो सकते हैं। 39 वर्षों तक आपकी गृहस्थी में कुछ परेशानी रह सकती है। आप अगर अपने मददगारों के उपकार को भूलेंगे तो आपकी मदद करने वाले आपसे दूर जा सकते हैं और आपको परेशानी हो सकती है। बच्चों का ख्याल रखें उन्हें कुछ परेशानी होने की संभावना है।

उपाय

आपके लिए बेहतर होगा कि सद्कर्मों पर ध्यान दें। इससे आपकी स्थिति मजबूत रहेगी और आप समस्याओं से बचे रहेंगे। अन्यथा आपको कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है।

गुरु

आपकी कुण्डली के द्वादश भाव में बृहस्पति शुभ होकर स्थित है। आप स्वभाव से नेक और सरल व्यक्ति होंगे, आपके इस स्वभाव के कारण आपके शत्रु आपसे पराजित रहेंगे। उदार चरित्र एवं साधुओं की सेवा भाव के कारण आपके घर में धन–दौलत की कमी नहीं रहेगी। 11वर्ष की आयु के पश्चात आपका जीवन अत्यंत सुखमय गुजरेगा।

आप अन्तर्मुखी स्वभाव के व्यक्ति होंगे। आपका मन शांत रहेगा। कभी–कभी मौन की स्थिति में रहना आपको अच्छा लगेगा। अगर आप खर्चीले स्वभाव के व्यक्ति होंगे तो धार्मिक कार्यों में धन खर्च करेंगे। अगर आप निष्ठा पूर्वक साधना करें तो आपमें दिव्य शक्ति जागृत हो सकती हैं। किसी के घर अतिथि बनने से, धर्म स्थानों में पूजा–पाठ करने से तप करने से आपका भाग्य उन्नत होगा।

उपाय

1.आपको प्रतिदिन मन्दिर में देव मूर्ति के दर्शन के लिए जाना चाहिए।

2.प्रत्येक शनिवार को पीपल की पूजा करनी चाहिए।

शनि

आपकी कुण्डली में शनि द्वादश भाव में शुभ फलदायी नहीं है। इस स्थिति में शनि आपको मंदा फल प्रदान करेगा। आपको अपनी सेहत का विशेष ध्यान रखना होगा अन्यथा स्वास्थ्य में उतार–चढ़ाव बना रहा सकता है। विशेषकर आपको नेत्र का ख्याल रखना चाहिए अन्यथा ऑखों में परेशानी हो सकती है। आर्थिक विषयों में भी आपको सावधान रहना चाहिए अन्यथा नुकसान हो सकता है।

उपाय

1.एक वर्ष तक ब्रह्मचर्य का पालन करें।

2.मांस–मदिरा सेवन के कारण शनि मन्दा हो गया है, तो पानी से भरा घड़ा ज़मीन में दबाकर रोज

उसमें पानी डालें, उसे सूखने न दें।

3.सोना, चने की दाल, पीले रंग का कपड़ा दान करें, इससे माता–पिता का अशीर्वाद सदैव आपके साथ रहेगा और सुख में वृद्धि होगी।

4.जनहित के कार्य करें, इससे लाभ मिलेगा।

चन्द्र

आपकी कुण्डली के तृतीय भाव में स्थित चन्द्र शुभ फलदायी नहीं है। चन्द्र की इस स्थिति के कारण आपकी माता को अपना विशेष ध्यान रखना होगा अन्यथा उन्हें कष्ट सहना पड़ सकता है। इस स्थिति आपको माता के संदर्भ में चिन्ताजनक स्थिति का सामना करना पड़ सकता है।

आपके लिए सलाह है कि छोटी दूरी की यात्रा से पूर्व सही योजना बनालें क्योंकि चन्द्र की इस स्थिति के कारण छोटी दूरी की यात्रा लाभकारी रहने की संभावना कम है। व्यापारिक लाभ के लिए दूर की यात्रा करना हितकर हो सकता है।

उपाय

1.घर आए हुए अतिथियों का आदर सत्कार करें। उन्हें भूख–प्यासा न जाने दें। अन्यथा आपके ऊपर विपरीत प्रभाव पड़ेगा।

2.धन दौलत की वृद्धि के लिए लड़की के जन्म पर चन्द्रमा की वस्तु जैसे चावल, चांदी, सफेद वस्त्र दान करें। पूजनोत्सव में हरे रंग के वस्त्र का दान अवश्य करें।

3.दैवीय आपदा से बचने के लिए ससुराल के सदस्यों की शादी में धन खर्च करें।

4.परिवार को बुरे प्रभाव से बचाने के लिए लड़के के जन्म पर सूर्य की वस्तुओं का दान करें।

5.अकाल मृत्यु, दुःख व चोरी से बचने के लिए गेहूं व गुड़ का दान करें।

6.परिवार में वृद्धि के लिए पुत्र या दौहित्र के जन्म पर सूर्य की वस्तुओं का दान करें।

राहु

अपकी कुण्डली के एकादश भाव में राहु शुभ होकर स्थित है जिससे आप धर्म–कर्म के अनुसार चलने वाले व्यक्ति होंगे। किसी के साथ धोखा और छल करना आपको पसंद नहीं होगा। आप अपनी मेहनत, हिम्मत और भाग्य से उन्नति की राह पर आगे बढ़ते जाएंगे। आप अपने बल पर धन सम्पत्ति अर्जित करेंगे।

उपाय

पिता से प्राप्त सोना अथवा बृहस्पति से सम्बन्धित पीली वस्तु सम्भाल कर रखें। इससे पिता की

अनुपस्थिति में भी आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी।

केतु

आपकी कुण्डली के पंचम भाव में केतु मंदा होकर स्थित है। आपका बचपन बहुत ही खुशहाल होगा आप बचपन में सुन्दर और आकर्षक होंगे, लेकिन अगर आप अपनी सेहत और सुन्दरता का ख्याल नहीं रखेंगे तो जैसे–जैसे युवावस्था में कदम बढ़ाते जाएंगे आपकी सुन्दरता आपका आकर्षण कम होता जाएगा। आपको सांस लेने में तकलीफ हो सकती है। संतान सुख के लिए आपको इंतजार करना पड़ सकता है।

उपाय

1.यात्राओं में कठिनाईयों से बचने के लिए सूर्य–चन्द्र की संयुक्त चीजें चलते पानी में बहाएं। लाभ होगा।

2.शरीर पर सोना धारण करें इससे स्वास्थ्य लाभ मिलेगा।

3.माथे पर केसर का तिलक लगाएं।

4.बृहस्पति की चीजें चलते पानी में बहाएं स्वास्थ्य एवं धन का लाभ होगा।

5.शनि की वस्तु सफेद मूली रात को सोते समय जीवनसाथी के सिरहाने रख दें। सुबह इसे मंदिर में जा कर दान कर दें। यह जीवनसाथी और संतान के लिए उत्तम होगा।

6.शुभ कार्य के लिए जाते समय पीछे से कोई आवाज नहीं दे।

ग्रहों की युति का फल

कुण्डली में फल देने वाली ग्रह युति नहीं है

लाल किताब के अनुसार सामान्यतः कुण्डली में किसी भी भाव में दो ग्रहों की युति होने के कारण योग का निर्माण होता है। ग्रहों की युति की अनुकूलता या प्रतिकूलता अन्य ग्रहों की कुण्डली में स्थिति पर निर्भर करती है। अन्य ग्रहों की शुभ स्थिति होने पर ग्रहों की युति शुभ परिणाम देने वाली होती है तथा अशुभ स्थिति होने पर ग्रहों की युति अशुभ फलदायी होती है। योग का अर्थ होता है, कुण्डली को विशिष्टता प्रदान करना अर्थात् विशेष रूप से अच्छा होना या विशेष रूप से बुरा होना।

आपकी कुण्डली में किसी भी प्रकार से ग्रहों की युति नहीं बन रही है अतः भावानुसार ग्रह अपना शुभ या अशुभ फल प्रदान करेंगे। आपकी कुण्डली बिना ग्रहों की युति वाली कुण्डली कही जाएगी तथा विशिष्ट शुभाशुभ फल प्रदान न करके सामान्य स्तर पर परिणाम देने वाली होगी।

लाल किताब से ऋण और उपाय

आपकी कुन्डली में कोई ऋण नहीं है

लाल किताब में जो मुख्य रूप से ऋण बताए गए हैं वे निम्न हैंः पितृऋण, बन्धुऋण,निजिऋण, कन्या अथवा बहन का ऋण, जीव हत्या ऋण, अजन्मे का ऋण एवं परमात्मा का ऋण। ऋण को शाप भी कहते हैं। स्पष्ट शब्दों में कहें तो ऋण का अर्थ यह है कि हमने अपने पिछले जन्म में व्यक्ति विशेष को, जिसके ऋण से हम ग्रस्त हैं या तो परेशान किया होगा या इस हद तक पीड़ित किया होगा कि उनके द्वारा दिये गये शाप को इस जन्म में हमें ऋण के रूप में चुकाना होगा।

आप बहुत भाग्यशाली हैं जो इनमें से किसी भी ऋण से ग्रस्त नहीं हैं अर्थात् आपकी कुण्डली ऋण मुक्त कुण्डली है। आपको परिवार के सदस्य, रिश्तेदारों, मित्रों एवं समाज के लोगों से पूर्ण सुख एवं सहयोग मिलेगा तथा आपका जीवन खुशियों से व्यतीत होगा।

आपके लिये कुण्डली प्रकार

धर्मी कुन्डली

आपकी कुण्डली को धर्मी बनाने वाले ग्रह शनि/राहु/केतु के स्वभाव में परिवर्तन हो गया है जिससे अब ये ग्रह आपकी सफलता में कहीं भी रूकावट पैदा नहीं करेंगे बल्कि ये ग्रह भी अन्य ग्रहों की भांति शुभ फल प्रदान करेंगे। आपको नौकरी प्राप्त करने के लिए अधिक संघर्ष नहीं करना होगा एवं नौकरी में पदोन्नति मिलती रहेगी।

आप व्यवसाय करेंगे तो आपका व्यवसाय दिन–प्रतिदिन उन्नत होता जाएगा और आपकी आर्थिक स्थिति मजबूत होती जाएगी। आपको सामाजिक सम्मान प्राप्त होगा और आप परिवार सहित सांसारिक सुखों का आनन्द लेंगे।

कायम ग्रहों वाली कुन्डली

आपकी कुण्डली में ग्रह मित्र ग्रह की राशि में स्थित है जिस पर किसी ग्रह की अशुभ दृष्टि नहीं पड़ रही है और न ही किसी ग्रह के साथ अशुभ युति बन रही है और न तो आपकी राशि एवं पक्के भाव में कोई अशुभ ग्रह स्थित हैं जिसके कारण आपकी कुण्डली कायम ग्रहों वाली कुण्डली है। जिसके कारण आपकी कुण्डली में ग्रह मजबूत स्थिति में हैं।

आप बहुत ही भाग्यशाली होंगे आप जो भी काम करेंगे उसमें भाग्य आपका पूरा–पूरा साथ देगा जिससे आपके कार्य निर्विध्न रूप से पूर्ण होंगे। सफलता आपके कदम चूमेंगी। दैवी कृपा आप पर बरसती रहेगी। आपकी आर्थिक दशा उन्नत रहेगी, धन की कभी कमी नहीं होगी। आप सांसारिक सुखों का उपभोग करेंगे।

नाबालिग कुन्डली

12 वर्ष की उम्र तक की कुण्डली को नाबालिग ग्रहों वाली कुण्डली कही जाती है। कुण्डली के लग्न में स्थित राहु और शनि को नाबालिग ग्रह कहा जाता है।

आपकी कुण्डली नाबालिग होने के कारण ग्रहों के शुभ फल में कमी आएगी अथवा ग्रहों का फल विलम्ब से प्राप्त होगा। आप आपने कार्यों में मिल रहे परिणाम से संतुष्ट नही होंगे। आप कार्यों में सफलता के प्रतिशत को बढ़ाने के लिए अपने शुभ चिंतकों से परामर्श लें और किसी के साथ साझा कार्य करें।

1.प्रथम वर्ष के लिए सप्तम भाव और उसमें स्थित ग्रह का प्रभाव होगा।
2.दूसरे वर्ष के लिए चतुर्थ भाव और उसमें स्थित ग्रह का प्रभाव होगा।
3.तीसरे वर्ष के लिए नवम भाव और उसमें स्थित ग्रह का प्रभाव होगा।
4.चतुर्थ वर्ष के लिए दशम भाव और उसमें स्थित ग्रह का प्रभाव होगा।
5.पंचम वर्ष के लिए एकादश भाव और उसमें स्थित ग्रह का प्रभाव होगा।
6.छठे वर्ष के लिए तृतीय भाव और उसमें स्थित ग्रहों का प्रभाव होगा।
7.सातवें वर्ष के लिए द्वितीय भाव और उसमें स्थित ग्रहों का प्रभाव होगा।

8.आठवें वर्ष के लिए पंचम भाव और उसमें स्थित ग्रहों का प्रभाव होगा।

9.नवें वर्ष के लिए छठा भाव और उसमें स्थित ग्रहों का प्रभाव होगा।
10.दशवें वर्ष के लिए द्वादश भाव और उसमें स्थित ग्रहों का प्रभाव होगा।
11.ग्यारहवें वर्ष के लिए प्रथम भाव और उसमें स्थित ग्रहों का प्रभाव होगा।
12.बारहवें वर्ष के लिए अष्टम भाव और उसमें स्थित ग्रहों का प्रभाव होगा।

उपाय

शीघ्र एवं पूर्ण शुभ फल प्राप्ति के लिए आपकी कुण्डली को नाबालिग बनाने वाले ग्रह का उपाय करें।

साथी ग्रहों वाली कुन्डली

आपकी कुण्डली में प्रथम ग्रह दूसरे ग्रह की राशि में स्थित हैं और दूसरा ग्रह पहले ग्रह की राशि में स्थित है। इनके अलावा एक ग्रह एक दूसरे ग्रहों के पक्के घरों में स्थित हैं। इसके कारण आपकी कुण्डली साथी ग्रहों वाली कुण्डली बन गयी है।

साथी ग्रहों की कुण्डली होने से ग्रहों का नकारात्मक प्रभाव समाप्त हो गया है, जिससे आपके कार्यों में रूकावटें कम आएंगी और जो भी बाधाएं आएंगी आप अपनी बुद्धि एवं बल उनका निदान निकाल पाएंगे। आप नौकरी करते हैं तो आपकी तरक्की होगी और व्यवसाय करते हैं तो आपका व्यवसाय दिन–प्रतिदिन उन्नत होगा एवं धन का लाभ होगा। आप सदा क्रियाशील और उर्जावान रहेंगे। अपने सम्बन्धियों एवं मित्रों से सहयोग मिलेगा और जीवन आनन्दमय गुजरेगा। आप हर तरह की सुख सुविधाओं का उपभोग करते हुए लम्बे समय तक जीवित रहेंगे।

मांगलिक दोष

आमतौर पर मांगलीक दोष का नाम सुनते ही लोग भयग्रस्त हो जाते हैं, परंतु ऐसा नहीं है। एक दिन–रात में 24 घंटे होते हैं और प्रतिदिन 24 घंटों में से 10 घंटे पैदा होने वाले बच्चे मांगलिक कहलाते हैं, तथा अन्य 14 घंटों के लगभग पैदा होने वाले बच्चे मांगलिक दोष से रहित होते हैं। विवाह के लिए लड़के व लड़की की कुण्डली का मिलान करते समय मांगलिक दोष पर ध्यान दिया जाता है या तो कुण्डलियां मांगलिक दोष से रहित हो या फिर दोनों ही कुण्डलियों में मंगलिक दोष उपस्थित हो जिससे कि एक की कुण्डली का मंगल दोष दूसरे की कुण्डली के मंगल दोष से कट जाए। कुण्डली का मंगली होना कोई अभिशाप नहीं है, ज्ञान की कमी या अपूर्णता के कारण ही यह मान लिया गया है कि मंगल पापी ग्रह है।

मंगल भगवान विष्णु के अवतार वाराह एवं पृथ्वी पुत्र होने के कारण मंगलकारी है। मंगल के बलवान होने के कारण ही व्यक्ति स्वस्थ, रक्तवान, पराक्रमी, शत्रुओं का विनाश करने वाला, युद्ध में सदा विजयी, तथा धनी होता है, इन सबका कारक मंगल है। लाल किताब की कुण्डली के अनुसार चतुर्थ भाव का मंगल कर्क राशि में होने के कारण अधिक हानिकारक है, जबकी अन्य भावों (1,7,8,12) में कम हानिप्रद है। मंगल नीच राशि में होने से कमज़ोर होता है, इसलिए बुरा फल देता है।

प्रथम भाव में मंगल

आपकी कुण्डली में मंगल प्रथम भाव में बैठा हुआ है इसलिए यह आपके लिए शुभ है परंतु इसके शुभ और अशुभ प्रभाव का सामना आपके जीवनसाथी को करना पड़ सकता है। यदि कुण्डली में शुक्र शुभ स्थिति में है तो मंगल शुभ फल देगा और यदि शुक्र मन्दा है तो मंगल अशुभ फल प्रदान करेगा।

मंगल दोष के उपाय

1.सदाचार का पालन करें।

2.सुबह–सुबह शहद का सेवन करें।

3.स्वयं मीठा खाएं व मेहमानों को भी मीठा खिलाएं।

4.जीवनसाथी के साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करें एवं उनकी उचित देखभाल करें।

5.संयुक्त परिवार में रहें।

6.घर में बुजुर्गों की सेवा करें तथा उनका आशीर्वाद लें।

7.ससुराल से मधुर सम्बन्ध बनाए रखें।

8.पशु पक्षियों जैसे गाय, कुत्ता, बन्दर, कौआ, मछली, चीटी आदि को भोजन दें।

9.विकलांगों की सहायता करें।

10.असहाय विधवा स्त्री की सहायता करें।

11.दॉत साफ रखें।

12.नाक–कान छेदन कराएं।

13.अपने मकान में थोड़ा सा कच्चा स्थान अवश्य रखें।

14.देवी–देवताओं की उपासना करें व ईश्वर पर विश्वास रखें।

क्या नहीं करें:

1.जिस सेफ, अलमारी में आप सोने–चांदी के गहनों या रूपये पैसे को रखते हैं उसे कभी पूरी तरह खाली नहीं रखें।

2.जिस मकान का मुॅह दक्षिण दिशा में हो उसमें नहीं रहें।

3.किसी को गाली नहीं दें।

4.क्रूर आचरण नहीं करें।

5.हाथी दॉत या हाथी दॉत से बनी हुई वस्तुएं घर में नहीं रखें।

6.जंग लगा हुआ लोहे का औजार या शस्त्र अपने घर में नहीं रखें।

7.झूठी गवाही नहीं दें।

8.मुफ्त में किसी से कुछ भी नहीं लें।

9.मॉस–मदिरा का सेवन नहीं करें।

10.जहां तक हो सके झूठ से बचने की कोशिश करें।

रत्नों का महत्व

कुण्डली में जब भी कोई ग्रह अशुभ स्थिति में हों या किसी भी कारण से कमज़ोर स्थिति में हो तो उसमें शुभता लाने या ग्रह को बल देने के लिए उस ग्रह से सम्बन्धित रत्न या उपरत्न को धारण करते हैं। प्रत्येक रत्न विशिष्ट रासायनिक अवयवों से मिलकर ठोस रूप धारण करता है, इसे विशेष ऊंगली में पहना जाता है। रत्न को धारण करने का प्रयोजन यह है कि ग्रह विशेष का रत्न अन्तरिक्ष से उस सम्बन्धित ग्रह की रश्मियों को त्वचा के माध्यम से शरीर में परावर्तित करा देता है, इससे उस ग्रह के तत्व की शरीर में कमी पूरी हो जाती है तथा ग्रह बलवान होकर शुभ फल देने वाला बन जाता है। परंतु इसके लिए रत्न का शुद्ध एवं दोष रहित होना अति आवश्यक है, क्योंकि दोषकारक रत्न लाभ की बजाय हानि करते देखे गए हैं। आपकी कुण्डली के अनुसार निम्नलिखित रत्न को धारण करने से लाभ मिलेगा।

आपके लिये रत्न

सूर्य–माणिक्य

सूर्य बलवान होने से आत्मबल एवं आत्मविश्वास में वृद्धि होती है एवं सरकारी मामलों में सफलता प्राप्त होती है। जो लोग सरकारी नौकरी प्राप्त करने के लिए प्रयास करते हैं उन्हें सफलता मिलती है। सरकारी क्षेत्र में रूका हुआ धन प्राप्त होता है और स्वास्थ्य उत्तम रहता है। आपकी कुण्डली में सूर्य कमजोर स्थिति में है इसे मजबूत बनाने के लिए सोने की अंगूठी में सवा पॉच रत्ती माणिक्य शुक्ल पक्ष में रविवार की प्रातः अपने दाहिने हाथ की अनामिका उंगली में पहनें। अगर आप माणिक्य धारण नहीं कर सकते हैं तो इसका उपरत्न हकीक धारण कर सकते हैं।

धातुः सोना

बीज मंत्र
ऊॅ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः

पौराणिक मंत्र
ऊॅ जपाकुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरि सर्वपाध्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।

चन्द्र–मोती

चन्द मजबूत होने से मॉ का स्नेह और सहयोग दीर्घ काल तक प्राप्त होता है। मानसिक स्थिति मजबूत होती है और नौकरी, व्यवसाय में धन का लाभ होता है। यात्रा सुखद और लाभकारी होती है। आपकी कुण्डली में चन्द्र अशुभ स्थिति में है इसे शुभ स्थिति में लाने के लिए चॉदी की अंगूठी में कम से कम सवा पांच रत्ती का मोती शुक्ल पक्ष में सोमवार के दिन अपने दाहिने हाथ की कनिष्ठका में पहनें। इससे मानसिक स्थिति मजबूत होगी और कारोबार में लाभ होगा। यात्रा सुखद और लाभकारी होगी। मानसिक शांति प्राप्त होगी। अगर मोती नहीं धारण कर पाते हैं तो चन्द्रमणी अथवा ओपल पहन सकते हैं।

धातुः चांदी

बीज मंत्र
ऊँ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः

पौराणिक मंत्र
ऊँ दधिशंख तुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुट भूषणम्।।

मंगल–मूंगा

मंगल के मजबूत होने से पराक्रम में वृद्धि होती है एवं बड़े भाई से सुख और सहयोग प्राप्त होता है। ज़मीन जायदाद के मामलों में लाभ होता है। आपकी कुण्डली में मंगल कमजोर स्थिति में है इसे मजबूत बनाने के लिए ताम्बे की अंगूठी में कम से कम सवा पांच रत्ती का मूंगा शुक्ल पक्ष में मंगलवार के दिन अपने दाहिने हाथ की अनामिका उंगली में धारण करें। यदि आप अंगूठी धारण नहीं करना चाहें तो मूंगे की माला पहन सकते हैं।

धातुः ताम्बा

बीज मंत्र
ऊँ क्रां क्रीं क्रौं सः भोमाय नमः

पौराणिक मंत्र
ऊँ धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्ति समप्रभं।
कुमारं शक्तिहस्तं च मंगलं प्रणमाम्यहम्।।

बुध–पन्ना

बुध के बलवान होने से व्यापार में उन्नति होती है। बुआ, बेटी, मौसी, बहन का जीवन सुखमय होता है। छात्रों को शिक्षा में बाधाओं का सामना नहीं करना पड़ता है। आपकी कुण्डली में बुध कमजोर स्थिति में है इसे मजबूत बनाने के लिए सोने की अंगूठी में कम से कम सवा पांच रत्ती का पन्ना शुक्ल पक्ष में बुधवार के दिन अपने दाहिने हाथ की कनिष्ठिा उंगली में धारण करें। अगर आप पन्ना नहीं पहन पाते हैं तो इसका उपरत्न जैड भी पहन सकते हैं।

धातुः पंचधातु

बीज मंत्र
ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः

पौराणिक मंत्र
ऊँ प्रियड.गु कलिकाश्यामं रूपेणा प्रतिमं बुधम्।

सौम्यं सौम्य गुणोपेतं तं बुधं प्रण्माम्यहम्।।

केतु–लहसुनियां

केतु शुभ स्थिति में होने से संतान के लिए शुभ होता है। यात्रा सुखद और लाभकारी होती है। आध्यात्मिक शक्ति का विकास होता है और दैवी कृपा प्राप्त होती है। आपकी कुण्डली में केतु अशुभ स्थिति में है इसे शुभ बनाने के लिए पंच धातु या सोने में कम से कम सवा पांच रत्ती का लहसुनियां शुक्ल पक्ष में मंगलवार के दिन अपने दाहिने हाथ की मध्यमा या अनामिका उंगली में धारण करें।

धातुः पंच धातु, सोना

बीज मंत्र
ऊँ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः

पौराणिक मंत्र
ऊँ पलाश पुष्प सकाशं तारका ग्रह मस्तकम्।
रोद्रं रोद्रात्मकं तं केतु प्रणमाम्यहम्।।

शुक्र–हीरा

शुक्र के बलवान होने से सांसारिक सुखों में वृद्धि होती है। विशेषकर यदि आपकी गृहस्थी में कोई समस्या है तो वह दूर होगी और जीवनसथी से स्नेह प्राप्त होगा। वाहन सुख प्राप्त होगा। आपकी कुण्डली में शुक्र कमज़ोर स्थिति में है इसे मजबूत करने के लिए आप प्लेटिनम या चॉदी की अंगूठी में कम से कम पॉच सेन्ट का हीरा या सवा रत्ती का जरकन शुक्ल पक्ष में शुक्रवार के दिन अपने दाहिने हाथ की मध्यमा उंगली में धारण करें।

धातुः प्लैटिनम

बीज मंत्र
ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः

पौराणिक मंत्र
ऊँ हिमकुन्द मृणालाभं, दैत्यानां परमं गुरूम्।
सर्वशास्त्र प्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।

आपके लिये रुद्राक्ष

आपका जन्म एकादशी तिथि को हुआ है, आपके लिए ग्यारहमुखी रूद्राक्ष धारण करना उपयुक्त रहेगा। यह रूद्राक्ष एकादश रूद्रों का स्वरूप माना जाता है। इस रूद्राक्ष को धारण करने से आपके जीवन में आने वाली बाधाएं दूर होंगी और आप हर क्षेत्र में सफल होंगे। आपके मान सम्मान एवं धन में वृद्धि होगी, आपको हर प्रकार का सुख प्राप्त होगा। यह आपको संतान सुख प्रदान करने में भी सहायक होगा। स्त्री अगर एकादश मुखी रूद्राक्ष धारण करें तो उनके लिए विशेष लाभकारी होता है, इससे उनके पति की आयु लम्बी होती है।

ग्यारहमुखी रूद्राक्ष धारण करने का मन्त्रः

ऊँ रूं मूं यूं औ